ECONOMICS

B.A Part one
Paper IInd

किमत तंत्र का अर्थ / (meaning of the price machenism)

किमत तंत्र का मुक्त अर्थव्यवस्था में कार्य :-

(The role of price machenism in a free enterprises economy)

By- Dr. Shailesh Kumar
dept. of economics
Bazar college Siwan

21.5.20

किमत तंत्र का अर्थ :- (meaning of the price machenism)

हर समाज में कानूनी तथा सामाजिक संस्थाऐं होती हैं। व्यक्तिगत आर्थिक क्रियाएं उनके अनुसार होनी चाहिए। मुक्त अर्थव्यवस्था में, जिससे किमत प्रणाली संबंध रखती है, उत्पादन के साधन निजी होते हैं। कच्चे माल, मशीनों तथा फैक्टरियों के निजी स्वामी होते हैं। जो स्वतंत्रता पूर्वक देश के वर्तमान कानूनों के अनुसार उनकी व्यवस्था कर सकते हैं। सब व्यक्ति इस विषय में स्वतंत्र होते है कि वे किसी भी व्यवसाय को चुन लें। तथा पारस्परिक लाभ को ध्यान में रखते हुए चाहे जिसके वस्तुओं तथा सेवाओं का क्रय विक्रय कर सके। हम यह भी कह सकते हैं कि किमत तंत्र आर्थिक संगठन की वह प्रणाली है जिसमें हर व्यक्ति उपभोक्ता, उत्पादक और साधन स्वामी के रूप में पर्याप्त स्वतंत्रता के साथ आर्थिक क्रिया में लगा रहता है। दूसरे शब्दों में हम यह भी कह सकते हैं कि किमत तंत्र पारस्परिक विनिमय तथा समन्वय की प्रणाली है, जो आर्थिक क्रिया की कुशलतापूर्वक व्यवस्था और पथ प्रदर्शन करती है।

किमत तंत्र का मुक्त अर्थव्यवस्था में कार्य

(1) क्या और कितना उत्पादन करना (What & how much to Produce) किमतों का पहला कार्य इस समस्या को हल करना है कि किन-किन वस्तुओं का और कितनी-कितनी मात्रा में उत्पादन किया जाए। इसमें अर्थ व्यवस्था में कुल उत्पादन की बनावट या दुर्लभ साधनों के बंटवारे से संबंध समस्या भी पाई जाती है। क्योंकि साधन दुर्लभ होते हैं इसलिए समाज को उत्पादित की जाने वाली वस्तुओं के बारे में निर्णय लेना होता है। जैसे, गेहूं, कपड़ा, सड़के

P.T.O

दूरदर्शन, विद्युत, भवन आदि। एक बार वस्तुओं के बारे में निर्णय लेना होता है अर्थात कितने क्विंटल गेहूँ, चावल, कपड़े इत्यादि। उत्पादित वस्तुओं की किस्मों और मात्राओं के बारे में निर्णय, समाज के उनके लिए प्राथमिकताओं या अभिमानों के आधार पर होता है। यदि समाज वर्तमान में अधिक उपभोक्ता वस्तुओं के उत्पादन को प्राथमिकता देता है तो वह भविष्य में उनकी कम मात्रा लेगा।

(2) उत्पादन कैसे करना (how to produce) कीमतों का दूसरा कार्य वस्तुओं के उत्पादन में प्रयुक्त होने वाली तकनीकों को निर्धारित करना होता है। साधन सेवाओं का प्रतिफल ही उनकी कीमत है। मजदूरी श्रम सेवा की कीमत है। लगान भूमि से प्राप्त और ब्याज पूँजी से प्राप्त सेवा की कीमत है।
दक्षतम उत्पादन क्रिया का प्रयोग करना हर उत्पादक का लक्ष्य होता है। आर्थिक दृष्टि से दक्षतम उत्पादन क्रिया वह है जो न्यूनतम लागत से वस्तुओं का उत्पादन करती है। उत्पादन क्रिया का चुनाव साधन सेवाओं की सापेक्ष कीमतों और उत्पादन की वस्तुओं की मात्रा पर निर्भर करता है।

(3) आय वितरण का निर्धारण करना (to determine income distribution) कीमतों का एक अन्य कार्य आय के वितरण को निर्धारित करना है। मुक्त अर्थव्यवस्था में कुल वितरण और आय वितरण एक दूसरे पर निर्भर रहते हैं। यह प्रणाली पारस्परिक विनिमय की प्रणाली है जिसमें प्रायः वही व्यक्ति उत्पादक भी होते हैं और उपभोक्ता भी। साधन स्वामी मुद्रा के बदले अपनी सेवाएँ बेचते हैं और फिर साधन सेवाओं के स्वामी होने के नाते आय प्राप्त करते हैं। इस प्रकार आय साधन स्वामियों से उत्पादकों की तरफ और पुनः लौटकर उपभोक्ताओं की तरफ प्रवाहित होती है।

~~संसाधनों का पूर्ण उपयोग करना (to provide an incentive to growth) कीमतें आर्थिक विकास की व्यवस्था करने का एक महत्वपूर्ण साधन है। कीमत तंत्र के माध्यम से सुधार, नव प्रवर्तन और विकास की प्रेरणा मिलती है। ऊँची कीमतें और लाभ से औद्योगिक संस्थाओं को~~

P.T.O.

Scanned by CamScanner

(4) संसाधनों का पूर्ण उपयोग करना (to utilise resource fully)

कीमत प्रणाली एक अर्थव्यवस्था के संसाधनों का पूर्ण उपयोग करने में भी सहायक होती है। संसाधनों के पूर्ण उपयोग से अभिप्राय पूर्ण रोजगार है। इसके लिए बड़े निवेशों द्वारा आय में वृद्धि करने की आवश्यकता होती है। और अन्ततः बचत और निवेश में समानता। एक पूंजीवादी अर्थव्यवस्था में बचत और निवेश में समानता ब्याज दरों को कम कर के लाई जाती है। जब अर्थव्यवस्था संसाधनों के दक्ष प्रयोग द्वारा पूर्ण रोजगार के स्तर के निकट पहुँच रही होती है तो आय तीव्र दर से बढ़ती है और इसके साथ बचतें भी। परन्तु निवेश पीछे रह जाता है। जिसे ब्याज दरों में कमी कर के बचतों के स्तर तक लाया जा सकता है। इस प्रकार ब्याज दर समानता लाने के यंत्र का कार्य करता है। फिर भी, पूर्ण रोजगार के निकट पहुँच रही अर्थव्यवस्था में निवेश और बचत की समानता लाने के लिए केवल ब्याज पर ही निर्भर नहीं हो सकते।

(5) आर्थिक विकास की प्रेरणा प्रदान करना (to provide an incentive growth)

कीमतें आर्थिक विकास की व्यवस्था करने का एक महत्वपूर्ण साधन है। कीमत तंत्र के माध्यम से सुधार, नव प्रवर्तन और विकास की प्रेरणा मिलती है। ऊँची कीमतें और लाभ से औद्योगिक संस्थाओं को इस बात के लिए प्रोत्साहन मिलता है कि वे अपेक्षाकृत अच्छी तकनीकों के विकास और सुधार के लिए अन्वेषण और प्रयोगीकरण पर बहुत अधिक खर्च करें।

अर्थव्यवस्था कीमतों के माध्यम से ही अपने आप को इच्छाओं, साधनों और तकनीकों में परिवर्तन के अनुकूल ढालती है। यदि उपभोक्ताओं को एक वस्तु की अपेक्षा दूसरी वस्तु की अधिक इच्छा है तो दूसरी वस्तु की कीमत बढ़ जायेगी। साधन उस उद्योग में लग जाएगें। लाभ भी बढ़ेंगे। अधिक लाभों के कारण अपेक्षाकृत उच्च तकनीक अपनाई जाएगी। कम लागत और अधिक लाभ नए उत्पादकों को आकर्षित करेगी जिससे पूँजी का निर्माण होगा। इसमें संदेह नहीं कि आर्थिक विकास बहुत से अन्य साधनों पर निर्भर करता है फिर भी स्थिरता से आर्थिक विकास की व्यवस्था में कीमतें महत्वपूर्ण कार्य करती हैं।

निष्कर्ष — इस प्रकार मुक्त अर्थव्यवस्था में पूर्ति और माँग के माध्यम से कार्यशील कीमत तंत्र प्रमुख संगठनात्मक

P.T.O

Scanned by CamScanner

शक्ति का कार्य करता है किस वस्तु का और कितनी मात्रा में उत्पादन किया जाए, इसका निर्धारण करता है यह प्रणाली साधन सेवाओं का प्रतिफल तय करती है और साधनों का उपयुक्त दिशाओं में आवंटन करके आय का समान वितरण करती है। अर्थव्यवस्था के संसाधनों का पूर्ण उपयोग करती है और आर्थिक वृद्धि के साधन को प्रदान करती है।

Scanned by CamScanner